परमाणु ईंधन के बाज़ार में मंदी

फुकुशिमा हादसे का असर परमाणु के बाज़ार पर नज़र आने लगा है। खास तौर से परमाणु ईंधन निर्माता कंपनियों की हालत खस्ता है।

पिछले सप्ताह ब्रिटेन की न्यूक्लियर डी-कमिशनिंग अथॉरिटी ने घोषणा की कि वह सेलाफील्ड स्थित अपना एक संयंत्र बंद करने जा रहा है। दुनिया में दो ही संयंत्र हैं जो मिश्रित ऑक्साइड परमाणु ईंधन का उत्पादन करते हैं और सेलाफील्ड का संयंत्र उनमें से एक है। यह निर्णय तब लेना पड़ा है जब जापान में परमाणु संयंत्र बंद हो रहे हैं।

गौरतलब है कि जापान मिश्रित ऑक्साइड ईंधन का एक बड़ा ग्राहक रहा है और उक्त संयंत्र का तो वह एकमात्र ग्राहक था। इस संयंत्र को बंद करने का निर्णय ब्रिटेन के परमाणु उद्योगों के लिए एक बड़ा झटका साबित होगा। साथ ही ब्रिटेन को यह भी विचार करना होगा कि दुनिया में प्लूटोनियम के इस सबसे विशाल भंडार का वह क्या करे।

मिश्रित ऑक्साइड ईंधन का निर्माण परमाणु संयंत्र के खर्च हो चुके ईंधन या बेकार पड़े परमाणु शस्त्रों से प्राप्त प्लूटोनियम को यूरेनियम के साथ मिलाकर किया जाता है। इसके हिमायती कहते हैं कि इस तरह से हम परमाणु ईंधन में से अधिकतम संभव ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं, परमाणु कचरे की मात्रा को कम कर सकते हैं और साथ ही ऐसे पदार्थ को नष्ट कर सकते हैं जिसका उपयोग शस्त्र बनाने में हो सकता है। दुनिया भर में इस वक्त कुल उपयोग किए जा रहे परमाणु ईंधन में से 2 प्रतिशत मिश्रित ऑक्साइड होता है।

सेलाफील्ड का उक्त संयंत्र 2001 में स्थापित किया गया था और इसमें 10 साल की अवधि में 560 टन मिश्रित ऑक्साइड ईंधन बनाने की क्षमता थी। इस संयंत्र की मदद से ब्रिटेन अपने अधिकांश प्लूटोनियम भंडार (करीब 112 टन) को मिश्रित ऑक्साइड में तबदील कर लेता। मगर तकनीकी गड़बड़ियों के चलते इस संयंत्र ने अब तक मात्र 15 टन ईंधन ही निर्मित किया है। जापान की दुर्घटना के बाद तो स्थितियां ही बदल गई हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***